15/1/1966–1967 रात्रि क्लास

अभी बाहर से भी आते तो बहुत हैं ना। ये जो लिखा हुआ है इसके ऊपर 'गॉडली गिफ्ट' अच्छे अक्षर हैं। दिल्ली में तो ऐसे बहुत आते हैं। फॉरेनर्स भी आते हैं। अगर ऐसे गॉडली गिफ्ट करके ये किसको दिया जाए तो अच्छा है। बड़े–2 आदमी आते हैं। शिवजयन्ती पर भी अगर ये कोई को सौगात देवे। अच्छे–2 धर्मी खयालात का देख करके दिल्ली वालों के लिए खास बाबा विचार कर रहे हैं वा कलकत्ते यहाँ–वहाँ भी। तो ये कास्केट सौगात देना, जब है भी शिवजयन्ती, तो अच्छा रहेगा। ऐसे नहीं कि कोई कॉमन को दे देने का है। कलकत्ता है और उसमें भी अच्छे–2 बड़े–2 मनुष्य रहते हैं। किसको हिन्दी, किसको वो सौगात शिवजयन्ती पर शोभेगी। कोई को समझाने का भी चांस मिले तो अच्छा है; क्योंकि शिवजयन्ती मनानी तो है अच्छी तरह से। कैलेण्डर भी बन रहे हैं। उम्मीद तो नहीं है बॉम्बे वालों में कि टाइम पर ये टिन के कैलेण्डर भी पहुँचाएँगे। नहीं तो ये भी अच्छी सौगात होगी और वो कैलेण्डर भी भेजे हैं, देखें (कि) बनाकर भेज देते हैं या कोई विघ्न पड़ते हैं। ये प्रेस ये है यहाँ, फलाना ये है यहाँ, ये विघ्न बहुत पड़ते रहते हैं। इस शिवजयन्ती में प्रदर्शनी भी होवे तो अच्छा ही है। ...ये भी तुमको लिखत हम दे देते हैं। ये जो त्रिमूर्ति के नीचे में लिखते हैं ना वो इसमें ठीक लिखत नहीं है। लिखत बाबा लिख करके दे देंगे, वही लिखानी है और अक्षर अच्छे होने चाहिए। ये अक्षर बहुत अच्छे नहीं हैं। सिर्फ यहाँ बैठ करके याद करने के लिए नहीं है। ऐसे नहीं कि हेर पड़ जावे, यहाँ ही आना और थोड़ा अपने बाप को याद करना, वर्से को याद करना, बस खलास। जैसे उसने चार्ट लिखा था ना तो ऐसे तुम बच्चों को भी। बाबा सिर्फ तुम्हारे लिए नहीं कहते हैं, बाबा तो सबके लिए कहते हैं। और कोई भी चार्ट न(हीं) तो एक तो चार्ट ज़रूर लिखें तो उसमें उनको खुशी रहेगी। बाप को याद करना, वर्से को याद करना। हमको पढ़ाने वाला कौन है? तो जैसे कि और सब कुछ धंधा करते हुए ये सेकण्ड कोर्स उठाया हुआ है याद करने का। और कोई तकलीफ तो नहीं दिया जाता है। और कोई सर्विस न कर सकते हैं तो अपना बैठे–2 कल्याण तो करते रहें ना। ये बैठे हैं। जैसे दर्जी है, बैठ करके सिलाई करते हैं, तो ये अपना कमाई कर सकते हैं भविष्य के लिए बहुत, जितनी चाहे इतनी। अगर तकदीर में है तो करते रहेंगे। न होगी किसकी तकदीर में तो क्या होगा! हाँ, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडनाइट।

16/1/1966–1967 रात्रि क्लास

हम अभी जो स्टडी करते हैं सो श्रीकृष्णपुरी के लिए करते हैं। फिर विष्णुपुरी भी कहें, कृष्णपुरी भी कहें। एम–ऑब्जेक्ट तो रहती है ना। तो एम–ऑब्जेक्ट छोटे क्लास से ले करके एकदम ऊपर में चले जाते हैं। वो बड़े ते बड़ा इम्तहान यहाँ। इन सभी को कहा जाता है (कि) ये लौकिक इम्तहान हैं, भले फिर आई.सी.एस. तक भी चले जावें और फिर ये है हमारा परलौकिक पढ़ाई और इम्तहान। ये हम जानते हैं कि अभी पढ़ रहे हैं, फिर भविष्य...। आगे तो समझाते भी थे ना जहाँ जीत तहाँ जन्म। अभी तो जीत लायक बन रहे हैं। ये बुद्धि में तो है ना हम कहाँ के लिए पढ़ रहे हैं। तो स्टूडेण्ट को अपनी एम–ऑब्जेक्ट तो याद रहती होगी कि हम अभी नई दुनिया के लिए पढ़ रहे हैं। जितना पुरुषार्थ करेंगे इतना अच्छा पद पाएँगे और पढ़ा भी बेहद का बाबा रहा है ; क्योंकि शिवबाबा तो ज़रूर स्वर्ग का ही वर्सा देगा और क्या देंगें वो! बेहद का वर्सा तो इन देवी–देवताओं को ही मिला हुआ है। इसलिए ही सामने ये त्रिमूर्ति एम–ऑब्जेक्ट रखी जाती है। छपा रहे...। बिल्कुल साधारण बात .... लिखा हुआ है। फिर सतयुगी भारत को दैवी स्वराज्य दे रहे हैं या सहज राजयोग सिखला रहे हैं। ऐसा युक्ति से कोई ये लिख करके देवे। देखो, सतयुग में लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। बाबा ने राज्य दिया था। अच्छा, अभी नहीं है; क्योंकि कलहयुग है। फिर सतयुग में ज़रूर राज्य मिलना ही चाहिए। वो सबकी बुद्धि में तो आता है। ....कि बंदरों के सामने ये रतन रखे; परन्तु बंदर.... वापस कर दिए। ये गायन तो है ना ऐसे–2। दिल्ली में भेज देवें। अभी एक मास है ... लिख सकेंगे मेरे ध्यान में। (म्युज़िक बजा) बच्चों को बापदादा का यादप्यार, गुडनाइट।